हस्तप्रतनी प्रशस्तिमां प्राप्त नगरो के गामो अंगेनी ऐतिहासिक सामग्री : एक नोंध

डॉ. कनुभाई शेठ

गुजरात प्रदेशनी ए विशेषता छे के अेना हस्तप्रत ग्रंथभंडारोमां लाखोनी संख्यामां हस्तप्रतो सचवायेली छे. समयनी अपेक्षाअे ई.स. दशमा-अगियारमा सैकाथी आरंभी वीसमा सैका पर्यंत, प्रारंभमां ताडपत्र पर लखायेली अने पछीथी कागळ पर लखायेली लाखोनी संख्यामां हस्तप्रतो मळी आवे छे. भाषानी दृष्टिअे जोईअे तो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन गुजराती-राजस्थानी वगेरे भाषामां आवी हस्तप्रतो रचायेली-लखायेली छे । प्राचीन-मध्यकालीन गुजरातनुं आ हस्तप्रतोनुं साहित्य प्रायः जैन मुनिओने हाथे रचायेलुं, लखायेलुं के लखावेलुं छे । आ संदर्भमां अेम कही शकाय के जैन मुनिओ वर्षाऋतुमां एक स्थळे स्थिरवास करीने अने शेष काळमां विविध स्थळोअे विहार करीने धर्मोपदेश आपता । आ काळ दरम्यान तेमना वडे अनेक कृतिनी रचना करवामां आवी होय के नकल थई होय तेना स्थलनो ते कृतिमां के कृतिना अंतभागमां निर्देश करवामां आव्यो होय छे । आथी आपणने हस्तप्रतोमां - अेना अंतभागमां - प्रशस्तिमां भारतभरना विविध नगरो के गामोनो उल्लेख प्राप्त थाय छे । आ उल्लेखमां संवत/साल, पक्ष, तिथि, वार के क्वचित ऋतुनो निर्देश होय छे । ते सिवाय ते नगर के गाम कया प्रदेशमां आव्युं छे तेनो उल्लेख होय छे के क्वचित ते नगर के प्रदेशना शासक (राजा)नो उल्लेख होय छे । आम आ परथी आपणने ते नगर के गामनो ते ते समयना अस्तित्व अंगेनो निर्देश मळे छे । केटलाक नगरो के गाममां के ज्यां खास करीने आवी रचना के नकल थती, जेमके पाटण, स्थभंतीर्थ (खंभात), अमदावाद के जेसलमेर । अेटले आवा नगर के गामना छेक प्राचीनकालथी आरंभी आज पर्यंतना निर्देशो आवी प्रशस्तिओमां उल्लेखायेला होय छे । जे ते ते नगरना के गामना सुदीर्घकालीन अस्तित्वने सूचवे छे । वळी केटलाक नगर के गाम ते ते समये जे जे नामे प्रचलित हता तेनी तारीखवार माहिती मळे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे। जेमके कपडवंज, खंभात, वडोदरा अनुक्रमे कर्पटवाणिज्य, स्थभंतीर्थ, वटप्रद तरीके ओळखातां ।

(अ) आ प्रशस्तिमां संवत/साल-मास-पक्ष-तिथि-वार-नगर अने शासक अंगे उल्लेख मळे छे । जेमके

(१) संवत १४९२ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षे १० श्रामद **अणहिल पत्तने** पातसाह श्री अहम्मद विजय राजये लिखितम्

नीशीथ-चूर्णि

(२) सं. १५१३ वर्षे कार्तिक सुदि १२ खौश्रीमद **अणहिलपुर पत्तने**, श्रीकृतबविजय राजये ... मेघदूताख्यं काव्यम् लिखितम्

-मेघदूतकाव्य

(३) संवत १५४९ वर्षे कार्तिक वदि १२ दिने **मंडप महादुर्गे** सुरताण ग्याससाह विजयराजे श्रीपत्तनमध्ये ... लिखितम्

-आनंदसुंदर काव्य

(४) संवत १६९९ सहसिमासे वलक्षे पक्षे पूर्णियास्यां तिथौ... **श्रीनवानगरे जामश्री लाखाविजयिनि** राजये ... लिखितम्

तर्कभाषाम्

(५) संवत १५८० वर्षे फागुण वदि १० दशम्यां शनिवारे मूलनक्षत्रे श्रीसोजतीनगर्या रायश्री वीरमदेवविजय राज्ये .. लिखितम्

-भगवतीसूत्र

(६) अथ संवत १६८४ वर्षे ज्येष्ठ मास वदि २ **स्थानेश्वरराख्य** नगरे कुरुक्षेत्रोपकण्ठे साह **सलमी जहांगीर** राजये .. लिखितम्

- त्रैलक्यदीपक प्रबंध

(७) संवत १६६७ वर्षे जेष्ठ वदि ७ **धलूस्थाने पतिसाह सुरताण जलालदीन** अकबर महाराज्ये ... लिखितम्

उत्तराध्यनसूत्र वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब) केटलाक नगरोना प्राचीन नामोना उल्लेख मळे छे

१. जेमके कपडवंज अंगे

(१) संवत १४८० पुष्यार्के **कर्पटवाणिज्ये** लिखितम्

– राजप्रश्नीय सूत्र

(२) संवत १६७७ वर्षे अश्विन सित ९ सोमे **कर्पटवाणि-ज्यनगरे** ... लिखितम्

– कल्पसूत्र अवचूरि

२. महेसाणा अंगे

(१) संवत १५०९ वर्षे आसो सुदि १० शनौ **श्रीमहीशानपुरे** लिखिता.... प्रतिष्ठाविधि

३. वडोदरा अंगे

संवत १६४९ **वर्षे** मागसिर वदि ९ दिने रविवारे **वटपद्रनगरे** लिखितम्

प्रतय आराधना

४. सुरत अंगे

संवत १७६६ वर्षे शाके १६२८ प्रवर्तमाने श्रावणमासे कृष्णपक्षे ११. **सूर्यपुर** मध्ये लीपीचक्रे.

प्रश्न व्याकरण स्तबक

५. खंभात अंगे

(१) संवत १६१८ वर्षे वैशाष वदि १४ शुक्रे **श्रीस्तभतीर्थ मध्ये** ... लिखितम्

प्रश्न व्याकरण

(२) अधेह श्री **स्तंभतीर्थे** संवत १४७९ वर्षे ... परिशिष्टपर्वचरित्रं लिषितम्

परिशिष्ट पर्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(क) केटलाक बनावो अंगे उल्लेख

संवत १६८७ गूर्जरदेश व महति दुःकाले मृतकोस्थिगामे जाते श्रीपत्तने नगरे

विशेषशतक

नोंध : आ प्रकारनी ऐतिहासिक सामग्री नो समावेश करती प्रशस्तिना संग्रहना केटलाक ग्रंथो आ प्रमाणे छे.

१. जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह. संपा. मुनि जिनविजयजी ।
२. प्रशस्तिसंग्रह (बे भागमां) संपा. अमृतलाल शाह ।
३. प्रशस्तिसंग्रह. संपा. भूजबली शास्त्री ।
४. जैनग्रंथप्रशस्तिसंग्रह (भाग १ २) संपा. परमानंद शास्त्री ।
५. प्रशस्तिसंग्रह संपा. कस्तुरचंद कासलीवाल ।

आ उपरांत प्रतिमालेख (पाषाण अने धातु)ना लेखसंग्रहोमां पण आवा प्रकारनी सामग्री प्राप्त थाय ते उल्लेखनीय छे ।

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org